सुभाष चन्द्र यादव

जन्म : 15-03-1948 ई०।

जन्म-स्थान : बलवा, सहरसा

कृति : **'घरदेखिया'** (कथा-संग्रह), राजकमल चौधरी (विनिबंध), 'बीछल कथा' (सह-संपादन), अनेक आलोचना संबंधी आलेख प्रकाशित।

वरिष्ठ कथाकारक रूपमे प्रतिष्ठित सुभाषजी मैथिली साहित्यक कथा-धाराकेँ एक नव परिवेश दिस उन्मुख कयलनि। हिनक कथावस्तुक वर्ण्य-परिधि सर्वहारा अथवा उपेक्षित वर्गक चारूकात केन्द्रित रहैत अछि। जाहि उपेक्षित अथवा शोषित वर्गक हर्ष-विषाद, आशा-आकाँक्षा, परम्पराक प्रति विद्रोही स्वर एवं हुनक रीति-रिवाजकेँ अपन रचना सभमे प्रतिबिम्बित कयलनि अछि से गाम-घरक माटि-पानिक स्वाभाविक सुगंधक आभास करा दैत अछि।

पाठ-संदर्भ : प्रस्तुत कथामे लेखक ग्रामीण निम्न जातिक परिवेशक बड़ मार्मिक रूपेँ वर्णन कयलनि अछि आ ई देखयबाक प्रयास कयलनि अछि एखनो गामक वैह स्थिति अछि जे आइसँ पचास वर्ष पूर्व धरि छल।

घरदेखिया

झलफल भऽ गेल रहै। उपेन सड़केपरसँ हियासलकै जे कमेटी हौलवला बरन्डापर के सभ थिकै। पहिने ओकरा भेलै जे मुखिया-तुखिया होयतै। लग अयलै तँ ओ सभ नहि रहै। पाँच टा अनठीया छलै। ओकरा सभक लेल पटिया आ उपेनक जाजिम देल गेल रहै। पानि कयल लोटा कातमे पड़ल छलै। बिमलाक घरदेखिया तँ ने थिकै? ओ सोचलकै। दिन पछिले रबिक टेकल रहै मुदा, फेर समाद अयलै जे छुतका भऽ गेलै। समाद आयल छलै तँ ओकरा शंको भेल छलै जे कतौ टारै-तारैबला बात तऽ नहि छै? मुदा ई विचार ओकरा अपने अनसोहाँत लगलै। कका एसकरे लड़िका देखि आयल छलै। घर-बर पसिन्न कऽ कऽ दिन ठेकि देलकै। लड़िका कलकत्तामे डरेबरी करै छै आ छोट भाय दोकान करै छै। डेढ़ बिगहा खेत छै। पित्ती सामिले छै। लड़िका एन-मेन बौके बेटा-सन छै। समता रंग, ओहने बान्ह-काठ आ ओहने बाढ़ि। ई सभ कका घुरल छलै तँ कहने रहै। ओकरो बेजाय नहि बुझयलै। दू सालसँ कथा पक्का नहि भऽ रहल छलै। ककी मटिऔने-सन छलै। घरो छूछ रहै।

ओ रघुनीकेँ एक कात बजाकऽ पुछलकै-"के सभ छिऐ ?"

-"वैह सभ छिऐ। बिमलापर आयल छै'- रघुनी कहलकै।

-"कखन एलै?"

-"कनी काल होइ छै।"

-"तूँ अपने बथनापर किएक ने बिछना देलहक?"

-"एह, हमहूँ तँ बजारसँ अबिते छी। अङनो नै गेलिऐ ।"

अङना एके छैक मुदा दुआरपरक घर ने ककेक छै ने उपेनेक । घरदेखिया कमेटी घरमे रहय, ई उपेनकेँ नीक नहि बुझयलै। ककाकेँ पुछलकै-"रघुनियेँ दरबजापर बैसकी किएक नहि देलहक?"

–''हँ हँ, ओही ठिन देबै बैसकी। हे यैह कने पाहुनो सभ डोलडाल जाइत छथिन, तऽ''–कका कहलकै।

उपेन लालटेम लेसऽ चल गेलै । लालटेम लेसि कऽ कमेटीपर अयलै। घरदेखिया सभ लोटा लऽ कऽ विदा भऽ गेल छलै। झपसू बिछान समटैत रहै। ओ पुछलकै–''मर, झपसू भाइ कतऽ सँ एलै।

–''आयल तँ छलिऐ मेहमाने सबहक संगे। कनी चलि गेलिऐ ममाक भेँट कर''–झपसू उतारा देलकै।

''झपसू भाइ, खूब तीमन दूरि करबौलहक ।''

–''की करबै बौआ, अपन सक छै ? छुतका भऽ गेलै तऽ....।''

ओ सभ चीज लऽ कऽ रघुनीक दुआरिपर अयलै। भुइयाँमे खूब मोटगर कऽ लार गदिया देलकै। ताहि परसँ पटिया आ जाजिम बिछा देलकै। लालटेम ओलतीवला बत्तीमे टाङि देलकै।

''हे रौ झपसू बौआ, कनी ओइ अंडी गाछ लगसँ दूटा गोरहन्नी लऽ आन। हम ताबे एक डोल पानि आनि कऽ राखि दै छिऐ ।''–कका कहलकै।

उपेन खढ़-पात बीछि कऽ कात करैत रहलै।

रघुनियो दलानक बत्ती आ बन्हन सभ सड़ि गेल छलै। टाटकेँ माटि खा गेल छलै। तीनियेँ दिससँ टाट छलै। मोखीवाला टाट नहि छलै। टाट निच्चेँ धँसल जाइत रहै से सौंसे घर निफाह-सन बुझाइत रहै। खढ़ कहियासँ ने पड़ल छलै। बाँसक झंझट नहि रहितै तँ रघुनी अपनेसँ छाड़ि लेने रहितै। चैतसँ पहिने कोनो तरहेँ छाड़ऽ पड़तै। नहि तँ बरखा आ बिहाड़िमे घरमे रहल नहि जयतै।

रघुनी अङनासँ निकललै। उपेन सिरहौनी दऽ कहलकै। तीन टा छलैक । आर दूटाक बेगरता छलै।

''सिरहौनी तँ छै एकटा मुदा चिक्कट मैल छै।''– रघुनी बजैत अङना चल गेलै। ''एँह बाप रे ! ई तँ ठीके तते मैल छह जे दै बला नहि छऽ''–उपेन अलगेसँ कहलकै।

–''की हेतै, नहि छै तँ की करबहक। जाजिम तरमे राखि दहक ।''

''चाह-ताह के इंतजाम नहि हेतह ?''– रघुनी पुछलकै ।

–'' दिन खन लाबलकै रहय एक पौवा दूध। आब हेतै तब ने। ओना हेबो करतै तँ एके कप जोकरक।''

–''ओहीमे भऽ जेतै। देखहक गय।''

उपेन चाहक सरंजाम ओरिऔलकै। चुल्हिपर किछु चढ़ल छलै। बिमला बैसलि आँच दैत रहै।

''की चढ़ौने छिही ?'' उपेन पुछलकै।

''दालि छिऐ।'' बिमला बजलै।

–''हँट केन खरापो हेतौ ?''

–'' की बनेबहक से ? चाह ? बना ने लऽ होइ छऽ ।''

बिमला दालि उतारि उतरबरिया घर चल गेलै।

बिमलाकेँ एहि साल सतरहम लागि गेलै। देखलासँ तेहन कहाँ लगै छै? मुँह-कान सुखायल छै। एहि अगहनीमे धनकटनी करैत रहलै। दू कोस बान्हक ओहि पारसँ नित्तह मथ-बोझाइ। कहियो लार, कहियो खढ़, कहियो चिलमिली। ओकरा मोन नहि छै बिमलाकेँ कहियो हँसैत देखने छलै। बाजितो कम्मे छै। कोनो काज पड़ल तखने वा टोकलेपर ।

चाह भऽ गेल छलै। उपेन बिमलाकेँ हाक देलकै। ओ चुपचाप चौकठि लग आबिकऽ ठाढ़ भऽ गेलै।

''दालि चढ़ा दही।''–कहि उपेन दुआरपर चल अयलै।

घरदेखिया सभ घुरल नहि छलै। रघुनी, झपसू आ कका बूरमे आगि दऽ कऽ बैसल छलै। उपेन केटलीकेँ घूरसँ सटाकऽ राखि देलकै जाहिसँ चाह ठँढ़यतै नहि।

डोलमे पानि छलै। घरदेखिया सभ अयलै तँ हाथ-गोर धोलकै। तीन गोटे घूर लग अयलै। उपेन चाह ढारि पहिने ओकरे सभकेँ देलकै। एकटा

गिलास उपरसँ अदहा फूटल छलै। उपेनकेँ ओहिमे चाह दैत कने संकोच भेलै। दूध एक्के रत्ती छलै। चाह अलगसँ कारी बुझाइत रहै।

"कथी ले हरान भेलौँ। हम सभ चाह पिबैत छी थोड़े । बजारमे जे रहै-ए से पीबै-ए।"— लड़िकाक पित्ती बजलै।

"हमहूँ सभ पिबै छी थोड़े ! रघुनीए आउर बाजार गेल तँ एक टेमकेँ पी लेलक ।"— कका कहलकै।

चाहक बाद उपेन तीनूकेँ बीड़ी लगा कऽ देलकै। बिछौनपर बैसल दूनू जुअनका घरदेखिया दिस बीड़ी बढ़ौलकै तँ ओकरा सभक हाथमे सिकरेट देखलकै।

"आइ कखनी चलल छलिऐ?"— उपेन पुछलकै।

–"गामसँ तँ चललिऐ काल्हिए । राति झपसू ओतऽ रहलिऐ । आइ दू बाँस दिन उठल रहै तँ चललिऐ । दू-दू टा धार पार होबऽ पड़ैत छै!"

–"ओइ दिन तँ हम सभ एहिना खाय-पिबै बेर धरि बैसल रहलिऐ जे अहाँ सभ आब एबै तब एबै। हमरा सभकेँ भेल रहय जे मेला-तेलापर अटकि गेल हेबै। फेर बिहान भेने समाद एलै।"

तकर बाद लड़िकापर गप्प चलऽ लगलै। लड़िका एखन कलकत्तेमे छै। पढ़ल नहि छै। कोनो टरकपर खलासीक काज करै छै। सैह उपेनोकेँ अतरज लागल रहै जे छबे मासमे लड़िका कोना डरेबरी करऽ लगलै ! मुदा, ओ सभ कहलकै जे लड़िका कमाइ धरि खूब छै। उपरियो आमदनी भऽ जाइ छैक। खा-पी कऽ एक सय टका बचा लैत छै।

फेर समय-सालपर गप्प होबऽ लगलै । महगी, रौदी आ जाड़ । रामचन अयलै तँ केतारीपर गप्प भेलै जे बड़ उपरदह होइ छै। के हदि घड़ी ओगरबाहि करैत रहय!

कका उठि कऽ अङना चल गेलै। कनी कालमे उपेनकेँ हाक देलकै। भानस भऽ गेल रहै। कका थारी-लोटाक जुटान कऽ लेने छलै। चौका देल भऽ गेलै तँ उपेन बैठकी देलकै। लोटामे पानि लऽ कऽ बजाबऽ दुआरपर

अयलै। ओ सभ कुर्रा कयलकै। जकरा जुत्ता छलै, डेढ़िएपर खोलि देलकै। जाधरि थारी अयलै, ताधरि ओ सभ घरक चीज-बौसकेँ नेहारैत रहलै। कका, रघुनी आ उपेन आग्रह कऽ कऽ परसैत रहलै। खा-पीकऽ ओ सभ कनी काल हाथ सेदलकै। उपेन सुपारी परसलकै। फेर बीड़ी लगाकऽ देलकै। ओकरा सभकेँ ओढ़ना नहि छलै। उपेन अङनासँ सीरक आनि कऽ देलकै तँ एक गोटे बजलै–"कथी ले अनलिऐ। अहाँ सभ की ओढ़बै हम सभ तँ चद्दैरेमे खेपि लितिऐ।"

'छै ओढ़ना। अहाँ सभ लियऽ ने'– उपेन कहलकै।

"अइ सीरकसँ काज चलत ने ?"–रघुनी पुछलकै।

–"हँ-हँ, उपरसँ कनियो टा किछो रहलासँ भऽ गेलै की !"

–"सैह, किएक तँ ऐ घरमे बड़ सिप्पा मारैत छै।"

–"नहि, से तरमे लारो छै! नहि हेतै जाड़।"

ओसभ बिछौनपर पड़ि रहलै। झपसू माथ तर एगो पिढ़िया लऽ लेलकै। सीरक नमतीमे छबो गोटेकेँ झाँपि लेलकै मुदा टाङ दिसमँ घोकड़ी लगबऽ पड़लै। रघुनी आ उपेन चुपचाप बीड़ी पीबैत रहलै। बाहर ठार खसैत रहै।

"बहुत राति भेलै। आब जाह, तोँहूँ सभ खाह-पियऽ गऽ।"— झपसू कहलकै।

इजोरिया रहै। उपेन लालटेम उतारि अङना चल अयलै। आङनसँ हरू दैत रहै। चुल्हीक आगि पजहायल नहि छलै। उपेन आगि तापऽ लगलै। बुझयलै जेना निसबद राति भऽ गेलै।

काकी तरुआ आ थोड़े दही लेने अयलै। ओकरा बैसल देखि पुछलकै–"खेलिऐ ?"

"आब खाइ छिऐ।"– ओ कहलकै। फेर पुछलकै-"दही तँ झपसूए लेने आयल छलह ने?"

"तँ अपना कतऽ हैतिऐ ।"–काकी बजलै। कनीकाल ठाढ़ि रहलै। फेर चल गेलै।

सभ किछु सेरा कऽ पानि भऽ गेल छलै। उपेनकेँ खाइत नीक नहि लगलै। खयलाक बाद दलदली आबि गेलै।

भोरमे काका उपेनकेँ बजाकऽ तीन-चारि सेर चाउर मङलकै। उपेन कनीकाल धरि चुप रहलै। पहिनो काका कैक बेर ने टका आ जिनिस लेने छलै।

"नहि देबेँ तँ आर तँ नहि किछु, बेभरम हैब।" काका बजलै।

"लिहऽ ।"–उपेन कहलकै। फेर पुछलकै–"जलखैमे की देबहक?"

'हमरा सकरता अछि ओते। एक्के बेर खिया-पियाकेँ विदा कऽ देबै।"-काका कहलकै।

उपेन दूधक भाँजमे गेलै मुदा नहि भेटलै । घुरलै तँ घरदेखिया सभ नहि रहै। मेला पर चल गेल रहै। उपेन आ रघुनी सोचने रहै जे चाह-ताह पियाकऽ लड़िकी देखा देबै। ओ दुनू ककापर कने खौँझयबो कयलै जे मेलापर किएक जाय देलहक। काका झपसूपर खेपि गेलै।

घरदेखिया सभ अयलै तँ सभ झपसूकेँ बजाकऽ विचारलकै जे लड़की देखा दिऐ । कने उकठाह जरूर लगलै । बिमलाकेँ पिन्हबै-ओढ़बैमे बेसी काल नहि लगलै। अङनेमे एकटा पटिया दऽ कऽ ओहि सभकेँ मङौलकै। बीड़ी-सुपारी देलकै। उपेन घरसँ बिमलाकेँ अनलकै। ओकरा पिन्हनामे भौजीक टेरीकोटनक साड़ी छलै। तेल लगौलासँ देह-हाथ चिक्कन लगैत रहै। बिमला हाथ महक बीड़ी-सुपारीबला तस्तरी घरदेखिया सभक आगाँ राखि ठाढ़ि भऽ गेलै।

" की नाम छी ?"–एकटा घरदेखिया पुछलकै।

– "बिमला कुमारी।"

–" बाबूक नाम ?"

–"सीरी महतो।"

–"आइ कोन दिन छिऐ ?"

–" सोम ।"

–"अहाँ कोन मुँहेँ ठाढ़ि छी ?"

–"दछिन मुँहेँ।"

" ठीक छै, जाउ ।"

सभ दुआरपर आबि गेलै।

"उपेन, मेहमान सभकेँ नहाबऽ । देरी नहि करऽ।"— कका कहलकै।

उपेन पानि भरि-भरि देलकै। धोती ओ सभ अपनेसँ फलहारलकै । खाइत-पिबैत दुपहर भऽ गेलै। ओहि सभकेँ लड़िकी पसिन छलै। कहलकै–"लड़िका कलकत्तासँ हालेमे गाम आयल छलै । एखन तुरते समाद पठाकऽ मङौनाइ खर्चाक घर भऽ जेतै। फेर एक्के मासक बाद बियाहोमे आबऽ पड़तै। तेँ लगनसँ दस दिन पहिने बजाकऽ समाद पठा देब, जिनका देखऽके हैत, देखि लेब।"

ओकरो सभकेँ यैह ठीक बुझयलै । रघुनी जोर देलकै जे लड़िकाक अयला पर एक-दू गोटे देखि औतै।

"बेस कोनो हरज ने।"– लड़काक पित्ती रघुनीकेँ कहलकै।

ओ सभ कपड़ा लत्ता समेटि विदा हेबा ले ठाढ़ भेलै तँ उपेन बीड़ी-सुपारी परसलकै। सड़क धरि अरियातने अयलै। ककी छलै।

"अपने सभक विचार हेतै तँ एबै फेर देखै ले।"–लड़िकाक पित्ती ठाढ़ होइत कहलकै।

"सुनू समधि, बीस बेर एनाइ-गेनाइमे किएक पैसा दूरि करब। एक्के बेर दिन ठेकिकऽ पठा देबै। लड़िकाक जे शोभा-सुन्दर होइ छै से हमसभ करब।"— कका कहलकै।

ओ सभ पच्छिम माथे विदा भऽ गेलै। कका आ उपेन घुरि अयलै। रघुनी अङना चल गेल छलै। दुआरपर केओ नहि छलै। उपेन बैसल रहलै। ककाकेँ बैसल नहि गेलै तँ पड़ि रहलै। उपेन कनी काल लतमिरदन कयल

जाजिम देखैत रहलै। फेर बीड़ी पिबैत सोचैत रहलै जे कका कोन-कोन भाँजे टकाक जोगाड़ करतै । ककाकेँ भरिसक आँखि लागि गेल छलै।

●

प्रश्न ओ अभ्यास

1. उपेन सड़क परसँ की देखलक ?
2. घरदेखिया ककरा पर आयल छलैक ? ओकर व्यक्तित्वकेँ दू वाक्यमे स्पष्ट करू ।
3. बिमला जाहि चूल्हिमे आँच दैत छलि, ओहि पर की चढ़ल छलैक ?
4. चाह लैत काल लड़िकाक पित्ती की बाजल ?
5. लड़िका कतय रहैत छल तथा कोन काज करैत छल ?
6. उपेन आ रघुनी कका पर किएक खिसिआयल ?
7. घरदेखिया बिमलासँ की-की पुछलकैक?

गतिविधि:

1. एहि कथाक आधार पर मिथिलाक ग्रामीण परिवेशक वर्णन करू ।
2. एहि कथाकेँ एकांकीमे परिवर्तित करू ।
3. अर्थ लिखू-अनठीया, पित्ती, समाद, भुइयां, सीरक, बेगरता ।
4. कथामे प्रयुक्त ठेठ देशज शब्द सभकेँ ताकि ओकर संग्रह करू ।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ई कथा जाहि वर्गक प्रतिनिधित्व करैत अछि, ओहि वर्गक सामाजिक स्थितिसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।

(ख) कथाकारक आन प्रमुख कथासँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।

(ग) मिथिलामे व्याप्त दहेज प्रथा एवं विपन्नताक परिप्रेक्ष्यमे ककाक मन:स्थितिसँ शिक्षार्थीकेँ अभिज्ञ करयबाक अपेक्षा शिक्षकसँ कयल जाइछ।

□